अध्याय
10

वाख–ललद्यद

कवयित्री

© NCERT not to be republished

कवयित्री-परिचय

1-ललद्यद का जन्म 1320 ईस्वी में कश्मीर में स्थित पांपोर के सिमपुरा गांव में हुआ था। मृत्यु - 1391 ईस्वी के आसपास। उपनाम -लला, लल्लेश्वरी, ललयोगेश्वरी, ललारिफा आदि।

2-उन्हें कश्मीर की आदि कवयित्री कहा जाता है। उनकी रचनाएँ मूलतः मौखिक परंपरा से हमें प्राप्त होती हैं।

3-उन्होंने मूल रूप से कश्मीरी भाषा में वाख छंद में अपनी रचना की है। वाख का शाब्दिक अर्थ होता है-वाणी।

4-उन्हें शैव-भक्ति परंपरा का वाहक कहा जाता है। उनके गुरु का नाम सिद्ध श्रीकंठ था।

5-उनकी कविताओं में भाव, विचार और अनुभूति का अद्भुत संगम देखने को मिलता है।

6-उनके काव्य का मुख्य उद्देश्य समाज में व्याप्त जाति-भेद,कर्मकांड, धार्मिक आडम्बरों को समाप्त कर जन-जन में प्रेम के संदेश का प्रसार करना है।

7-हिंदी में जो स्थान कबीर को प्राप्त है वही स्थान कश्मीरी में ललद्यद को मिला है।

8-तत्कालीन साहित्यिक भाषा संस्कृत के स्थान पर कश्मीरी में काव्य-रचना करना उस युग में उनके द्वारा उठाया गया एक क्रांतिकारी कदम था।

9-समकालीन कवि-शेखनुरूद्दीन (नंद ऋषि)।

पाठ-परिचय

1-प्रस्तुत काव्य में कश्मीरी भाषा के प्रसिद्ध कवयित्री ललद्यद की काव्य रचना 'वाख' का कश्मीरी भाषा से हिंदी में अनुवाद है। इन वाखों का संकलन मीराकांत जी ने किया है। वाख कश्मीरी भाषा का एक छंद है, जिसमें चार पंक्तियाँ होती हैं।

2-प्रस्तुत पाठ में कवयित्री ललद्यद द्वारा रचित चार वाख संकलित हैं। उन्होंने अपने वाख के माध्यम से सदियों से जनता की सुषुप्त चेतना को जागृत करने का कार्य किया है।

3-इन वाखों में ईश्वर की प्राप्ति हेतु किये जाने वाले प्रयासों को व्यर्थ बताया गया है। कवयित्री के अनुसार जीवन की अंतिम परिणति आत्मा का परमात्मा में विलीन हो जाना है।

4-उनके काव्य में जाति-भेद एवं धार्मिक बाह्यडम्बरों के प्रति विरोध का स्वर मुखरित हुआ है। आत्मज्ञान ही सच्चा ज्ञान है। अंतःकरण को पवित्र करने पर ही अज्ञानतारूपी अंधकार के बादल छंटेंगे और आत्मा सत्य की आभा से प्रकाशित होगी।

5-वह ईश्वर प्राप्ति के लिए कर्मकांडों के स्थान पर पारस्परिक प्रेम एवं सदाचरण को वरीयता देती हैं। कवयित्री के अनुसार सत्कर्मों द्वारा ही भवसागर को पार किया जा सकता है। वह ईश्वर की सत्ता को घट-घट में व्याप्त पाती हैं।

6- इनके काव्य में मध्यममार्ग पर चलने का संदेश निहित है। जो व्यक्ति धार्मिक भेद-

© JCERT not to be republished

भाव को त्यागकर सदाचरण में प्रवृत्त होता है वास्तव में वही सच्चा साधक है।

7-: इन्हें कश्मीर की 'मीरा' कहा जाता है।

काव्यांश 1

1. रस्सी कच्चे धागे की, खींच रही मैं नाव।

जाने कब सुन मेरी पुकार, करें देव भवसागर पार।

पानी टपके कच्चे सकोरे, व्यर्थ प्रयास हो रहे मेरे।

जी में उठती रह-रह हूक, घर जाने की चाह है घेरे।।

2 शब्दार्थ:- भवसागर-संसार रूपी समुद्र

सकोरे- मिट्टी का पात्र

हूक- पीड़ा, कसक, शूल

व्यर्थ- बेकार, फालतू।

3 प्रसंग:- प्रस्तुत पंक्तियां हमारी पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज भाग-1' में संकलित 'वाख' कविता से ली गयी है। इसके रचयिता ललद्यद हैं। इस काव्यांश में ईश्वर प्राप्ति हेतु किये जा रहे प्रयत्नों की व्यर्थता को प्रकट किया गया है।

4 व्याख्या:- प्रस्तुत वाख में कवयित्री कहती हैं कि मैं अपने जीवन रूपी नौका को सांस रूपी कच्चे धागे से जैसे-तैसे खींच रही हूँ। वह प्रार्थना कर रही हैं कि हे प्रभु! आप कब मेरी पुकार सुनकर इस जन्म-मरण रूपी भवसागर से पार उतारेंगे। वह अपने शरीर की तुलना मिट्टी के घड़े से करती हुई कहती है कि उससे हर दिन पानी टपक रहा है। अर्थात हर दिन उम्र कम होती जा रही है। प्रभु से मिलन के सारे प्रयत्न निष्फल होते जा रहे हैं जिसके कारण प्रभु से मिलन कि व्याकुलता और बढ़ती जा रही है।

5 **विशेष:-** 'रस्सी कच्चे.....नाव।' और 'भवसागर' में रूपक अलंकार है।

वाख शैली है।

भाषा सहज,सरल है।

ईश्वर से मिलन कि उत्कट अभिलाषा का निदर्शन हुआ है।

काव्यांश 2

1 खा-खाकर कुछ पाएगा नहीं,

न खाकर बनेगा अहंकारी।

सम खा तभी होगा समभावी,

खुलेगी साँकल बंद द्वार की।

2 शब्दार्थ:- समभावी-समानता की भावना।

द्वार- दरवाजा।

साँकल- जंजीर।

अहंकारी- घमंडी, अभिमानी।

3 प्रसंग:- प्रस्तुत पंक्तियां हमारी पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज भाग-1' में संकलित 'वाख' कविता से ली गयी है। इसके रचयिता ललद्यद हैं। इस काव्यांश में जीवन में संतुलन की महत्ता का प्रतिपादन किया गया है।

© JCERT not to be republished

4 व्याख्या:- कवयित्री कहती हैं कि भोग-विलास में लिप्त रहने से व्यक्ति को कुछ प्राप्त नहीं होता, बल्कि वह और उसमें गहराई से डूब जाता है। और जो व्यक्ति इन भोगों का संपूर्ण त्याग कर देता है उसमें अहंकार की भावना घर कर जाती है। इसलिए हमें न तो ज्यादा भोग करना है और न ही त्याग। दोनों में संतुलन स्थापित करने से ही हममें समभाव उत्पन्न होगा जिसके कारण हमारी आत्मा के दरवाजे पर लगी अज्ञान और अहंकार की कुंडी ढीली पड़ जाएगी और ज्ञान का प्रकाश रूपी दरवाजा खुला जाएगा।

5 विशेष:- 'खा-खा कर' में अनुप्रास अलंकार है।

ईश्वर प्राप्ति का साधन मध्यम मार्ग को माना है।

व्यर्थ के आडंबरों से दूर रहने की प्रेरणा है।

काव्यांश-3

1 आई सीधी राह से,गई न सीधी राह।

सुषुम-सेतु पर खड़ी थी,बीत गया दिन आह!

जेब टटोली,कौड़ी न पाई।

माझी को दूँ, क्या उतराई?

2 शब्दार्थ:- राह-मार्ग,रास्ता।

सुषुम-सुषुम्ना नाड़ी।

सेतु-पुल।

टटोली-खोजना,ढूंढना।

माझी-नाविक (प्रभु)।

उतराई-पारिश्रमिक, मजदूरी।

कौड़ी न पाई-कुछ भी प्राप्त नहीं होना।

3 प्रसंग :- प्रस्तुत पंक्तियां हमारी पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज भाग-1' में संकलित 'वाख' कविता से ली गयी है। इसके रचयिता ललद्यद हैं। इसमें कवयित्री ने अपने पश्चाताप को प्रकट किया है।

4 व्याख्या:-वह कहती हैं कि परमात्मा से मिलन के लिए मैंने साधारण मार्ग त्यागकर अन्य मार्ग (हठमार्ग) का सहारा लिया। अर्थात सहज भक्तिमार्ग को त्यागकर कुंडलिनी योग के माध्यम से ईश्वर और अपने बीच पुल बनाती रही। परन्तु मेरा यह प्रयास सफल नहीं हो सका। जीवन के दिन बीते जा रहे है। और मेरे पास ऐसा कोई साधन नहीं जिसके सहारे इस संसार सागर से पार उतर सकूँ।

5 विशेष:- प्रतीकों के माध्यम से कथ्य को प्रभावशाली बनाया गया है।

ईश्वर प्राप्ति के लिए सहज भक्ति मार्ग अपनाने पर बल दिया गया है।

संत कवियों की रहस्यवादी चेतना का प्रभाव है।

काव्यांश 4

1 थल-थल में बसता है शिव ही,

भेद न कर क्या हिन्दू-मुसलमां।

ज्ञानी है तो स्वयं को जान,

वही है साहिब से पहचान।।

© JCERT not to be republished

2 शब्दार्थ:- थल-थल-सर्वत्र, सभी जगह।

ज्ञानी-विद्वान।

साहिब-परमात्मा,ईश्वर।

3 प्रसंग- प्रस्तुत पंक्तियां हमारी पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज भाग-1' में संकलित 'वाख' कविता से ली गयी है। इसके रचयिता ललद्यद हैं। ईश्वर की सर्वव्यापकता पर प्रकाश डाला गया है।

4 व्याख्या:- कवयित्री का कहना है की इश्वर सृष्टि के कण-कण में व्याप्त है। बस आवश्यकता है उसको पहचानने की। आत्मसाक्षात्कार के माध्यम से ही इश्वर को प्राप्त किया जा सकता है। जब हम व्यर्थ के धार्मिक आडम्बरों का परित्याग कर अपने मन के अन्दर के इश्वर की आराधना करेंगे तो निश्चित रूप से इश्वर के सान्निध्य की प्राप्ति हमें होगी।

5 विशेष:- धार्मिक आडम्बरों का खंडन।

आत्मालोचन पर बल।

प्रवाहमयी भाषा का प्रयोग।

प्रश्न-अभ्यास

1. 'रस्सी' यहाँ किसके लिए प्रयुक्त हुआ है और वह कैसी है?

उत्तर:- 'रस्सी' मानव जीवन के लिए प्रयुक्त हुआ है और वह कच्चे धागे से बना हुआ है। अर्थात शरीर नश्वर है वह किस समय टूट जाये कुछ कहा नहीं जा सकता।

2. कवयित्री द्वारा मुक्ति के लिए किए जाने वाले प्रयास व्यर्थ क्यों हो रहे हैं?

उत्तर:- क्योंकि कवयित्री का जीवन कच्चे धागे के समान है यानि की वह सांसारिक मोह-माया के बंधनों में इस प्रकार जकड़ी हुयी है कि चाह कर भी अपने आराध्य के लिए समय नहीं निकाल पाती। इसी कारण से मुक्ति के सारे प्रयास निष्फल हो रहे हैं।

3. कवयित्री का 'घर जाने की चाह' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर:- 'घर जाने की चाह' का अर्थ है- आत्मा का परमात्मा से मिलन। जहाँ पहुंच वह तमाम सांसारिक बंधनों से मुक्त हो सके।

4. भाव स्पष्ट कीजिए-

(क) जेब टटोली कौड़ी न पाई।

उत्तर:- कवयित्री का कहना है कि व्यक्ति तमाम उम्र सांसारिक विषयों में लिप्त रहता है। अंतिम समय में उसे पता चलता है की उसके द्वारा कोई ऐसा कार्य तो हुआ ही नहीं जो उसे इस संसार सागर से मुक्त कर सके। इसलिए व्यक्ति को जीवन में सत्कर्म करते रहना चाहिए, वही साथ जाता है।

(ख) खा-खा कर कुछ पायेगा नहीं,

न खाकर बनेगा अहंकारी।

उत्तर:- इन पंक्तियों में कवयित्री मानव को मध्यममार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है। हर समय भोग-विलास में डूबे रहने से मनुष्य को

© JCERT not to be republished

कुछ भी प्राप्त नही होता और इन सांसारिक बन्धनों के सम्पूर्ण त्याग से उसमें अहंकार की भावना का उदय होता है। अतः कवयित्री त्याग और भोग के मध्य संतुलन बनाये रखने पर जोर देती हैं।

5. बंद द्वार की साँकल खोलने के लिए ललद्यद ने क्या उपाय सुझाया है?

उत्तर:- बंद द्वार का साँकल तभी खुलेगा जब हम त्याग और भोग को समान अनुपात में रख कर अपने ईश्वर की आराधना करेंगे। जब तक हम अपने अंतःकरण को शुद्ध एवं बाह्य इन्द्रियों पर विजय प्राप्त नहीं कर लें तब तक ज्ञानरुपी दरवाज़े की कुण्डी नहीं खुलेगी।

6. ईश्वर प्राप्ति के लिए बहुत से साधक हठयोग जैसी कठिन साधना भी करते हैं, लेकिन उससे भी लक्ष्य प्राप्ति नहीं होती। यह भाव किन पंक्तियों में व्यक्त हुआ है?

उत्तर:- आई सीधी राह से,गई न सीधी राह।

सुषुम-सेतु पर खड़ी थी, बीत गया दिन आह!

जेब टटोली, कौड़ी न पाई।

माझी को दूँ, क्या उतराई?

7. 'ज्ञानी' से कवयित्री का क्या अभिप्राय है?

उत्तर:- कवयित्री कहती हैं कि ज्ञानी व्यक्ति वह है जो स्वयं के गुण-दोषों का परीक्षण कर अपने मन को सत्य की आभा से आलोकित करे। परमात्मा को मंदिर-मस्जिद में ढूंढने के बजाय अपने ह्रदय में खोज कर उसकी आराधना करे। क्योंकि ईश्वर का निवास स्थान हमारा ह्रदय है।

© JCERT not to be republished